।। श्रीमते रामानुजाय नमः।।

।। श्रीमन्नारायण रामानुजयतिभ्यो नमः।।

श्री जीयर-शताब्दि महोत्सव एवं भगवत् प्रतिष्ठा

कार्यक्रम दि. 30.04.2009 से 10.05.2009

आमंत्रण-पत्रम्

भारतवर्ष की शस्य-श्यामला, अमृतवर्षिणी, प्राणदायी वसुंधरा अपने आंचल में अनेकों महापुरुषों, महर्षियों एवं अनमोल रत्नों के आविर्भाव से स्वयं को धन्य अनुभव करती है। इन्हीं महापुरूषों के विश्व कल्याणार्थ लोकोत्तर चरित्र के कारण श्रीधाम धरा सुविख्यात एवं वन्दनीय है। इस महिमामयी परम्परा में श्रीसंवत् 1965 (सन् 1909) श्रावण मास के उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दिन परमपावनी पुण्यसलिला गोदावरी -गंगा के तटप्रान्त में एक अलौकिक-तेजस्वी-होनहार व्यक्तित्व ''श्री तिरूवेंकटाचार्य'' नामक बालक का प्राकट्य हुआ, जिसे स्वयं श्री शेषनाग ने अपने विस्तृत फणों से आशीर्वाद प्रदान किया। भगवान श्रीमन्नारायण की शीतल एवं अनंत कृपापात्र ''श्रीतिरुवेंकटार्या'' महापुरूष-रत्न, चतुर्थ आश्रम ग्रहण करने के पश्चात् ''श्री श्री श्री त्रिदण्डी श्रीमन्नारायण रामानुजजीयर स्वामीजी महाराज के नाम से विश्व प्रसिद्ध हुए।

बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी, सुशील और शान्त स्वभाव के इन महापुरुष ने गृहस्थ जीवन से विरत बनकर ''आश्रमादाश्रमं गच्छेत्'' इस शास्त्रीय मर्यादा का पालन करते हुए सन्यास आश्रम स्वीकार कर वैदिक सनातन धर्म-संरक्षण-सम्वर्धन तथा समाज-कल्याण के निमित्त जो कार्य कर दिखाया उसका समग्ररूप में वर्णन करना संभव नहीं। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर गोरक्षा आन्दोलन तक श्री स्वामी जी महारज का राजैनतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा। सन् 1954 में सन्यास दीक्षा ग्रहण के पश्चात यतिवर श्री स्वामी जी महाराज वैदिक समाजरूप रत्नमय मणिकाओं को बटोरकर विरायमुक्त के निमित्त व सुन्दर कण्ठधर निर्माण करने में समर्पित हुए ओर उत्तर-दक्षिण की परम्पराओं को जोड़ने के लिए सुदृढबनकर भक्तों के मन में विराजमान हो गये।

हमारे पूर्वज महर्षिगण तपोबल के द्वारा ही अनेकों अदभुत कार्य सम्पादित किया करते थे। इस विषय पर गहन चिन्तन-मनन कर परम पूज्य श्रीस्वामीजी महाराज ने भगवान नर-नारायण की तपोभूमि बदरी क्षेत्र में वर्षों तक अलक नन्दा के तट पर गुफा में निवास कर फलाहार करते हुए ''मन्त्रराज अष्टाक्षर'' का अनुष्ठान किया, फलस्वरूप उन्हें अलौकिक सिद्धी प्राप्त हुई। पूज्यश्री की वह तपस्थली आज भी ''अष्टाक्षरी क्षेत्र'' के नाम से सुविख्यात है।

तपोमूर्ति श्रीजीयर स्वामी जी महाराज ने देखा कि समाज में संसारी लोग अपार आनंद के श्रोत करुणासागर भगवान से विमुख होने के कारण क्लेशाक्रान्त है। दयावान इन महान सन्त ने दुःखीजनों के शोक का निवारण करने के लिए समय-समय पर बृहद धार्मिक अनुष्ठान करते रहने का दृढसंकल्प लिया। उन्हीं के निर्देशन में भाग्यनगरी (हैदराबाद) में एक वर्ष तक कलिकल्मषनाशन परमपावन हरिनाम संकीर्तन, सकल सिद्धिप्रद-पुराणतिलक श्रीमदभागवत महापुराण का द्विसहस्र पारायण एवं अष्टोत्तरशत- कुण्डात्मक चतुर्वेद महायज्ञ आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए, जिसकी चर्चा जनसमुदाय में आज भी होती है।

भगवत् स्मरण ही सभी विपत्तियों से बचने का एक मात्र निर्विकल्प साधन है, ऐसा निश्चयकर महान मनीषी श्रीस्वामी जी महाराज ने मानव समुदाय को अनिष्ट निवारणार्थ एवं अभीष्ट प्राप्त्यर्थ एक समृद्ध समाज निर्माण के उद्देश्य से -'' श्री लक्ष्मीजी नारायण पूजन कार्यक्रम'' का परिचालन किया। अनेक श्रद्धालु मातायें इसमें सहयोगी की भूमिका निभाती हुई निरन्तरता देती आ रही हैं। इस अनुष्ठान के माध्यम से लाखों भक्त भागवतवृन्द लाभान्वित होते दिखाई दे रहे हैं।

श्रीमद् उभयवेदान्ताचार्य पीठम् के संस्थापक श्री जीयर स्वामी जी महाराज का विशेष ध्यान दिव्य प्रबन्ध, वैदिक वाङ्मय तथा विद्वत्जन के सम्मान और संरक्षण कार्य में सैदव केन्द्रित रहता था। अपौरूषेय वेद की गरिमा को विश्व-जनसमुदाय समक्ष प्रकट करने के लिए सन् 1960 में राष्ट्र की राजधानी दिल्ली में रामलीला मैदान में श्रीस्वामीजी महाराज ने एक अपूर्व बृहत कार्यक्रम सम्पन्न कराया। विश्व के इतिहास में सर्वप्रथम आयोजित ''विश्व वेद सम्मेलन'' में सम्पूर्ण भारतवर्ष से लगभग पाँच हजार वैदिक विद्वान तथा लाखों ज्ञानपिपासु दर्शक सहभागी हुये थे।

वैदिक धर्म के निर्वाहक श्रीजीयर स्वामीजी महाराज ने विज्ञजनों से परामर्श करके निर्णय किया कि- पर्यावरण की शुद्धि तथा सामाजिक समृद्धि, यज्ञ के बिना सम्भव नहीं है। समाज के सभी वर्ग के लोगों का यथोचित सम्मान का ध्यान रखते हुए विविध वर्ग के व्यक्तियों को यथा-योग्य कार्य में नियुक्तकर सन् 1960 के दशक में मुक्ति क्षेत्र नेपाल से समग्र भारत के प्रसिद्ध शहरों तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में 108 की संख्या में '' **श्रीराम क्रतु महायज्ञ**'' सम्पन्न कराया। जिस यज्ञ के माध्यम से करोड़ों नर-नारियों ने पूज्य श्री के श्रीमुख से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र तथा आदर्श नारी सीतादेवी के सत् चरित्र की शिक्षा प्राप्तकर अपने जीवन को धन्य बनाया। इन महायज्ञों के स्मृति स्तम्भ उन क्षेत्रों में आज भी विद्यमान हैं जैसे ब्रहमपूर(उड़ीसा), राजमंड्री(आंध्रप्रदेश)। मदुराई (तमिलनाडु) के केन्द्रीय कारागार तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर, वाराणसी (उत्तरप्रदेश) में भी क्रतुस्तम्भ का दर्शन कर सकते हैं।

यज्ञ एक अति प्राचीन पद्धति है, जो सृष्टिकाल से चली आ रही है। यदि हम इसे विधिपूर्वक सम्पन्न करें तो आज भी पूर्ण फल प्राप्त कर सकते हैं। इस बात को प्रत्यक्ष कर दिखाया। सामाजिक हित के निमित्त समर्पित, हमारे बड़े जीयर स्वामीजी महाराज ने सन 1972, मार्च में तिरूमलेश भगवान श्रीनिवास की सन्निधि में सम्पन्न '' सहस्रकुण्डात्मक श्री लक्ष्मी नारायण महाक्रतु'' से पूर्व आयोजित '' कारीरीइष्टि '' के अदभुत चमत्कार को उस समय के करोड़ों प्रत्यक्षदर्शी भूले नहीं है।

परम वन्दनीय ऋषि-महर्षि एवं आलवार-आचार्यो का वरदान है- उनके द्वारा रचित ग्रन्थ जिनका अध्ययन-मनन-चिन्तन कर अपने जीवन को आनन्दमय बना सकते हैं। भौतिकवाद के जाल में उलझकर समाज अपना लक्ष एवं कर्त्तव्य को भूलता जा रहा है। परतत्ववेत्ता श्रीस्वामीजी महाराज ने दिक्भ्रान्त लोगों को दिशाबोध कराते हुए भगवत तत्व का अनुभव कराने के लिए प्रतिष्ठोत्तर स्वाध्याय ज्ञान महायज्ञ आरम्भ किया। इस महायज्ञ के माध्यम से संस्कृत तथा उनकी शाखाओं के साथ-साथ द्रविड़ वेद (दिव्य प्रबन्धों) का विभिन्न स्थलों में अध्ययन, अध्यापन की व्यवस्था की गई। श्रीरंगम भूतपूरी आदि विविध क्षेत्रों में श्रीवैष्णव विद्वत जनों का बृहद सम्मेलन आयोजित कर उनके परामर्श अनुसार अपने पूर्वाचार्यों की श्रीसुक्ति के संरक्षण की योजना बनाकर कार्यान्वयन भी किया।

हमारे देवायल हमारी वैदिक संस्कृति एवं सनातन परम्परा के द्योतक साधना स्थल है। प्राचीनतम ऐतिहासिक धरोहरों की सुरक्षा करना हम सब वैदिक धर्मावलम्बियों का परम कर्तव्य है। इसी कर्तव्य का निर्वाह

करते हुए श्रीजीयर स्वामी जी महाराज ने श्रद्धालु भक्तजनों के सहयोग से अनेकों दिव्यदेशों का जीर्णोद्धार कराकर समाज को कर्तव्यपालन के प्रति प्रेरित किया। पूज्य श्री द्वारा अभियान के रूप में संचालित इस भगवत् कैंकर्य को एक आदर्शपथ मानकर स्वीकार करने पर हम भी कल्याण के भागी बन सकते हैं।

पूज्य श्री स्वामीजी महाराज ने सवंत् 2035 मार्गशीष शुक्ल 12 (द्वादशी) दिनांक- 31 दिसम्बर सन् 1979 के दिन अपनी इहलीला समाप्त कर वैकुण्ठ धाम को प्रयाण किया। श्रीस्वामीजी महनीय गुणों से परिपूर्ण होते हुए भी अत्यन्त सरल स्वभाव, दयाभावयुक्त-परम उदार, मधुरमुस्कान मिश्रित-कृपादृष्टि द्वारा आश्रित जनकष्ट निवारक भगवद् अंशभूत युगपुरूष जिन्होनें इस धराधाम को छोड़ने से पहले अपने ही समान सर्वगुण सम्पन्न, सुयोग्य उत्तराधिकारी समाज को समर्पित करते हुए अपनी अलौकिक दिव्य-शक्ति भी उनमें स्थापित कर दी। विज्ञजनों का अटल मत है- बड़े जीयर स्वामी जी महाराज ही चिन्न जीयर स्वामी जी महाराज में विराजमान होकर दिनानुदिन अदम्य उत्साह के साथ जनमन भावना, अनेकों बृहत्तर योजनाओं को आगे बढाते हुए समग्र विश्व में भाष्यकार श्रीरामानुज मुनि के सिद्धांत का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

ऐसे प्रात: स्मरणीय जगदवन्द्य आचार्य श्री श्री श्री त्रिदण्डी श्री मन्नारायण रामानुज जीयर स्वामी जी महाराज का ''शताब्दि महोत्सव'' विविध मनोरंजनात्मक एवं कल्याण कारक कार्यक्रमों के साथ दिनांक-30.04.2009 से 10.05.2009 तक भव्य रूप में सम्पन्न होने जा रहा है। इस महोत्सव के अन्तर्गत श्रीरामनगरम् (शमशाबाद) में तिरूकोट्टियुर(श्रीगोष्ठीपुरम) दिव्यदेश आकार में अष्टांग विमान के साथ निर्मित कलात्मक भव्य मन्दिर में भगवत प्रतिष्ठा कार्य भी सम्पन्न किया जाएगा। मनमोहक इस मन्दिर में सबसे ऊपर श्रीवैकुण्ठनाथ भगवान बीच में पेरिय -पेरूमाल श्री रंगनाथ तथा भूतल में आलवार आचार्यो के साथ भगवान श्री सीतारामचन्द्र विराजमान होगें इस मंगलमय अवसर पर सभी भक्त-भागवतवृन्द उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढाते हुए अर्चावतार भगवान के श्रीविग्रह के साथ-साथ देश-विदेश से सहभागी बने हुए वरिष्ठ विद्वान, पीठाधीश, सन्त-महन्त महानुभावों का संदेश श्रवणकर अपने जीवन को धन्य बनावें। आप सब सादर आमंत्रित है।

।। जय श्रीमन्नारायण।।

जीयर शताब्दी 2009

श्री कोदंडाराम, रंगनाथ, वैकुण्ठनाथ, पेरुमळ मंदिर निर्माण के प्रतिदिन आयोजित करने के कार्यक्रम

प्रातः 7.00 से 7.30 बजे	सेवाकाल
प्रातः 7.30 से 8.30 बजे	शात्तुमुरै, शांतिपाठम्, पारायणारम्भ, तीर्थप्रसाद का वितरण, प्रतिष्ठाशाला, इष्टागोष्ठी
प्रातः 8.30 से 9.30 बजे	गौपूजा, पंडितों का प्रवचन गोष्ठी, भजनगोष्ठी
प्रातः 9.30 से 10.00 बजे	सामूहिक पूजा कार्यक्रम का अलंकरण
प्रातः 10.00 से 11.30 बजे	सामूहिक पूजा कार्यक्रम
प्रातः 11.30 से 12.30 बजे	पूर्णाहुति, प्रसादगोष्ठी
दोपहर 12.00 से 1.00 बजे	मालिकों के लिए मंगल शासन, तदयाराधना का आरम्भ
दोपहर 1.00 से 3.30 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम
दोपहर 3.30 से 4.30 बजे	वेदस्वस्ति
दोपहर 5.00 से 5.30 बजे	श्रीविष्णुसहस्त्रनाम स्त्रोत्र पारायण
सायं 5.30 से 7.00 बजे	अतिथिसत्कार, श्रीवारि प्रवचन
रात्रि 7.00 से 9.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रसाद वितरण

इस जीयर शताब्दी महोत्सव कार्यक्रम में भाग लेकर आपके बहुमूल्य द्रव्य को सदाचार कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए भक्तों के लिए सुनहरा अवसर

एक बार तदीयाराधना सेवा कार्य आयोजन के लिए	रु. 5,00,000/-
अखण्ड रामसंकीर्तन मालिक के रूप में	रु. 2,00,000/-
अखण्ड श्रीविष्णुसहस्त्रनाम पारायण के मालिक के रूप में	रु. 2,00,000/-
150 लोग ऋत्विक मालिकों के रूप में	रु. 1,50,000/-
एक बार बालभोग प्रसाद समर्पण	रु. 1,00,000/-
वैदिक रीति से गोदान	रु. 50,000/-
एक इच्छावान को कैंकर्यकर्ता बनने के लिए	रु. 30,000/-
एक कुण्ड मालिक पूजा कार्य के लिए	रु. 20,000/-
वेदपारायण के अधिकारों की प्राप्ति के लिए	रु. 20,000/-
तदीयाराधना 1000 व्यक्तियों के लिए	रु. 15,000/-
एक पारायण पण्डित के मालिक के रूप में	रु. 10,000/-
बालभोग कैंकर्य 1000 व्यक्तियों के लिए	रु. 5,000/-
एक दिन ऋत्विक को मालिक के रूप में	रु. 2,000/-
एक गौपूजा कार्य के लिए	रु. 1,500/-
प्रतिदिन आयोजित करने के अष्ठोत्तर शतनाम् पूजा के लिए	रु. 216/-

भगवद बंधुओं भक्ति प्रेम भाव से इस पुण्य कार्यक्रम में भाग लें जीयर शताब्दी 2009 महोत्सव में श्रद्धा, भक्ति जन सेवा कार्यक्रम के लिए सक्रिय सहयोग करें। भगवद् बंधुओं से प्रार्थना की जाती है कि आप इस अविरल पुण्य कार्य में भाग लेकर आचार्य के कृपा पात्र बनें आप सबका स्वागतम् सुस्वागतम्

सदा आचार्य की सेवा में निरत रामानुजदास, जीयर शताब्दी महोत्सव समिति

जीयर शताब्दी महोत्सव

आमंत्रण पत्र

गुरुवार 30 अप्रैल 2009 से रविवार 10 मई 2009 तक

स्थान :

श्री राम नगर

मुचिन्तल, शमशाबाद, आर.आर. डिस्ट्रिक्ट (आं.प्र.)

* निवेदक *

जीयर शताब्दी महोत्सव समिति

सम्पर्क सूत्र :
0-9391012564
0-9391354479

जय श्रीमन्नारायण